नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक.....

दिनांक : 05-09-2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ गोरखपुर में **''साहित्य का उद्देश्य''** विषय पर व्याख्यान देते हुए मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य **प्रो. रामदरश राय** ने कहा कि साहित्य समाज को जीवन मूल्य प्रदान करता है। साहित्य मनुष्य को बनाने, जीवन में रोशनी देने, जागरुक करने एवं ऊर्जा प्रदान करने का कार्य करता है। साहित्य का काम संतोष एवं सुख प्रदान करना है अर्थात जो अनुभूति प्रदान करे वही साहित्य है। इसी को तुलसीदास ने इस रुप में कहा है – ''स्वान्तः सुखाय रघुनाथगाथा''।

साहित्य अच्छा लगने या समाज को अच्छा देने के लिए लिखा जाता है। साहित्य असुन्दर को सुन्दर तथा सुन्दर को और सुन्दर बनाकर प्रस्तुत करने का कार्य करता है। कदम–कदम पर साहित्य हमें सजग और सावधान करता है। साहित्य मनुष्य के जीवन को सुन्दर एवं सार्थक दृष्टि से जीने की प्रेरणा देता है। साहित्य हमें ज्ञान तथा विवेक प्रदान करता है एवं आपत्ति काल में एक मित्र की तरह सहयोग करता है। साहित्य सवांरता है, संस्कार देता है तथा भटकते हुए को राह दिखाते हुए चरित्रवान बनाता है। साहित्य के भरोसे हम अपने विरासत को बचाये रख सकते है।

साहित्य शिक्षा प्राप्त करने तथा सीखने की ललक पैदा करता है। साहित्य में सबका समावेश है तथा साहित्य में सभी विषय समाहित हैं। साहित्य प्रतियोगिता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। हिन्दी साहित्य की उपयोगिता रोजगार की दृष्टि से भी बढ़ जाती है। आज टेक्नालॉजी हमें बहुआयामी ज्ञान दे रहा है, लेकिन हम एक निष्ठ नहीं हो पा रहे हैं। साहित्य बहुत कुछ से सब कुछ तक है।

इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता का स्वागत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने स्मृति चिह्न एवं उत्तरीय देकर किया। हिन्दी विभाग के सभी छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग प्रभारी डॉ. आरती सिंह ने किया।

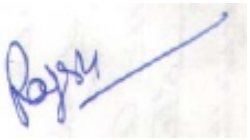

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी